[ब] संग्रहालय और प्रदर्शनियाँ

संग्रहालय प्रदर्शनी द्वारा विशेष विषय से सम्बन्धित ज्ञान का सम्प्रेप्रषण सहज माध्यम से जनता के बीच करता है। इसके लिए वह वस्तुओं का प्रदर्शन करता है जो उसके संग्रह में हो या बाहर से इस आशय से उधार लिया गया हो। पर इसमें कुछ कठिनाइयाँ हैं एक तो आर्थिक दूसरे किस प्रकार इन प्रदर्शों को रखने की व्यवस्था की जाय कि जनता उसकी ओर आकृष्ट हो, सभी आयवर्ग के लोगों हेतु इकट्ठा कैसे-कैसें प्रदर्श रखे जायं इसके हेतु तक्रनीक की प्रायः कमी होती है। साथ ही, जो प्रदर्श हैं उनके सुरक्षा की समुचित व्यवस्था तथा प्रदर्शों के बार-बार हटाने और बदलने से उनमें प्रदूषण से होने वाली हानियों आदि से सुरक्षा। यदि विद्वानों को ध्यान में रखकर प्रदर्शनी लगाई जाय तो इसका उद्देश्य पूरा नहीं होगा क्योंकि सामान्य जनता इससे लाभान्वित नहीं होगी।

इसके लिए आवश्यकता है प्रदर्शों में से दोनों कोटियों के लिए चुने जिससे दोनों का हित है। प्रदर्श ऐसे हो जो कलात्मक और आकर्षक हों तथा उनका विवरण साफ-साफ संक्षेप में लिखा हो। इसके सन्दर्भ में वहाँ समझाने की भी व्यवस्था हो कि दर्शक का खिंचाव उसकी ओर हो

सके। यहाँ के अधिकांश दर्शक अक्षिशित और अजागृत होते हैं। अतः इस विधि से उन्हें जाग्रत करने की प्रेरणा मिलती है। इसी से लिखित सामग्री ऐसे स्थान पर प्रस्तुत करना चाहिए जहाँ सामान्य जनता की निगाहें उसपर पड़ें। न इसमें आवश्यक वस्तुओं की भरमार हो, न केवल उच्चकोटि के बौद्धिक लोगों की आवश्यकता की वस्तुएँ ही प्रदर्शित हों। ये प्रदर्शनियाँ तीन प्रकार की होती हैं—एक स्थायी तथा दूसरे अस्थायी तथा तीसरे सचल।

स्थायी प्रदर्शनी—जहाँ प्रदर्श वीथियों में रखे होते हैं वहीं ऐसे प्रदर्शनी का स्थान होता है। इनका वहाँ शो केस में रखना सर्वथा उचित है क्योंकि न तो उसे निकाली जा सकती है, न प्रदूषित होती है और न चुराई ही जा सकती हैं। शो केस वस्तुओं के अनुसार बनवाना चाहिए कि प्रदर्श उसमें ठीक से दिखे। इससे प्रकाश की भी लाल किरणें तथा वातावरण का परिवर्तन इनको प्रभावित नहीं करता है।

संग्रहालय कर्मियों का धर्म है कि दर्शकों को उन प्रदर्शों के विषय में विरासत का सहारा लेकर इस प्रकार प्रभावित करें कि वे उनके लिए इतनी प्रिय हो जायं जितना सिनेमा। मानव प्रकृति है अपने पुरखों की प्रशंसा और उनकी थाती से जुड़ने की। इस ओर थोड़ा उत्प्रेरित करने के बाद स्वतः दर्शक का खिंचाव प्रदर्शों की ओर हो जायगा। कभी-कभी प्रदर्शों में किंचित फेरबदल भी करना चाहिए क्योंकि एक ही प्रदर्श बार-बार देखने से मन ऊबने लगता है। अतः नवीनता बनाये रखनी चाहिए।

अस्थायी प्रदर्शनी—अधिक आवश्यक है अस्थायी प्रदर्शनियों की व्यवस्था करना। यह आज प्रचार का सबसे सशक्त माध्यम है। यह दो दृष्टियों से लाभकर है—एक तो इसकी ओर सामयिक आयोजनों के कारण जनता का आकर्षण होता है तो दूसरी ओर परिवर्तन का भूखा समाज इसे स्थायी की अपेक्षा अधिक पसन्द करता है। इसके कारण छात्रों, नागरिकों तथा शिक्षित लोगों का बार-बार संग्रहालय आने की इच्छा बढ़ती है। इसमें एक पीढ़ी का या एक विधा का प्रदर्शन होता है। इसका परिणाम होता है कि दर्शकों को यह आकर्षित करता है। शोधकर्त्ता जो इस विषय पर काम कर रहे हैं उनके लिए भी इसकी उपयोगिता होती है। इसके माध्यम से किसी विशेष घटना धार्मिक उत्सव, ऐतिहासिक घटना, विधा, महान व्यक्तित्व के काल की क्रियाएँ, किसी विशेष विधा को बढ़ावा देने आदि के सम्बन्ध में तथा इसके नाम पर इसका आयोजन होता है। ऐसी प्रदर्शनियाँ आज अनेक संग्रहालयों द्वारा समय-समय पर आयोज़ित की जाती है। 'फोटोग्राफी हिस्ट्री ऑफ दि यूनिवर्स' का आयोजन राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र, नई दिल्ली ने 1997 ई० में, 'खेतों से सब ओर उकेरे' राष्ट्रीय संग्रहालय भोपाल द्वारा, 'अवध की नवाबी कला', राज्य संग्रहालय लखनऊ द्वारा दोनों 1985 ई० में; 'रायकृष्णदास एवं समकालीन साहित्यकार', 'भारत कला भवन संग्रहालय वाराणसी' द्वारा 1992 ई० में आयोजित किया गया था। इस प्रकार की प्रदर्शनियों के ये कुछ उत्कृष्ट उदाहरण हैं। ऐसी प्रदर्शनियाँ साल में एक बार कोई संग्रहालय प्रायः आयोजित करता है। कभी-कभी मेलों, पर्वों, विशेष समारोहों के अवसरों आदि पर भी इनका आयोजन होता है। विशेष अतिथियों के सम्मान में भी कभी-कभी इसका आयोजन होता है। जब सरकार कोई विशेष वर्ष घोषित करती है या संग्रहालय का वर्षगाँठ मनाया जाता है तब भी इसका आयोजन करते हैं।

इन प्रदर्शनियों की माँग जनता में खूब रही है। लोगों की भीड़ इसमें बराबर बनी रही। इनमें विशेष तकनीक से कला प्रदर्शों को सज्जित करने तथा इनके महत्त्व को जनता के बीच उजागर करने में संग्रहालयकर्मी विशिष्ट भूमिका अदा करते हैं। कुछ संग्रहालय आर्थिक अभाव के कारण इनका आयोजन नहीं कर पाते। पर बहुउद्देशीय संग्रहालयों में इनका आयोजन होना स्वाभाविक है। इसके आयोजन के समय प्रदर्शनी का उद्देश्य निश्चित किया जाता है और उसी को ध्यान में रखकर प्रदर्शों को इसमें रखा जाता है।

आज विज्ञान के विकास के युग में वैज्ञानिक प्रदर्शनियों का आयोजन वैज्ञानिक संग्रहालय देश भर में आयोजित करते हैं। इस दिशा में राजस्थान के बिरला संग्रहालय, विज्ञान और तकनीकी में प्रायः ऐसी प्रदर्शनियों का आयोजन होता रहता है। इन प्रदर्शनियों को बाहरी संग्रहालय से भी प्रदर्श उधार लेकर आकर्षक बनाते हैं। विदेशों में भी ऐसी प्रदर्शनियाँ प्रायः आयोजित होती रहती हैं। भारत में राष्ट्रीय संग्रहालय मथुरा भी प्रायः प्रतिवर्ष इसे आयोजित करता है जैसे 1987 ई० में 'मथुरा-शिल्पी', 'सांची कला', 'चित्रकला में कृष्ण' का आयोजन यहाँ किया गया था। भारत कला भवन, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय भी ऐसी प्रदर्शनियों का प्रायः आयोजन करता है जैसे स्वतंत्रता की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर 'स्वतंत्रता आन्दोलन की एक झलक' आयोजित किया गया था। इसके अतिरिक्त 'बंगाल का चित्रकला', 'कला सृजन की तीन पीढ़ियाँ' का आयोजन भी किया गया था।

ऐसी प्रदर्शनियों के लिए प्रायः कैनवास के टुकड़े पर दोनों ओर लकड़ी लगाकर कि उन्हें लपेटा जा सके तथा कहीं टांगा जा सके रेखाचित्र, रंगीन चित्र बनवाना चाहिए। संग्रहालय के कक्ष से बड़े सामानों को निकालना उनको हानि पहुँचाना होगा। अतः इसी विधि से उनका प्रदर्श करना उचित है। कभी-कभी कुछ शीशे के शो-केस में महत्त्वपूर्ण चित्रों को रखने की व्यवस्था करनी चाहिए। जब प्रेमचन्द पर प्रदर्शनी का आयोजन हुआ था तो इन्हीं शो-केसों में उनके समकालीन लेखकों की पाण्डुलिपियाँ रखकर प्रदर्शित की गई थीं। पर यहाँ ध्यान रखना चाहिए कि चित्र आकर्षक तो हों पर न बहुत चटकीले हों, न फूहड़ हों, न अनर्गल जोड़ गए हों। रुचिकर, विषय सम्बन्धित तथा तथ्यपरक चित्रों को ही वहाँ सजाया जाय।

सचल प्रदर्शनी—इसकी आवश्यकता इसलिए है कि भारत गाँवों में बसता है। गाँव के लोग गरीबी, अज्ञानता, असुविधा और सूचना के अभाव में प्रदर्शनियों को देखने से वंचित रह जाते हैं जबकि इनकी उपयोगिता उन्हीं के लिए विशेष रूप से होती है कि इससे वे बहुत कुछ सीख सकें। अतः उन तक स्वयं प्रदर्शनियाँ चलकर पहुँचे इसकी व्यवस्था सचल प्रदर्शनियों के माध्यम से की जाती हैं। इसके लिए सचल वाहन में एक प्रकार की प्रदर्शनी सजाकर गाँव-गाँव में वाहन ले जाकर लोगों को उसे दिखाया और समझाया जाता है। प्रायः स्टेशन वैगन, मेटाडोर, ट्रक, स्पेशल ट्रेन, बस आदि में इसे सजाते हैं और ऊपर लिखा होता है 'सचल प्रदर्शनी'। इन वाहनों को एक निश्चित समय तक एक स्थान पर खड़ा रखते हैं। फिर इसको आगे बढ़ाकर दूसरे गाँव, स्टेशन या सार्वजनिक स्थान पर पहुँचते हैं। ऐसी प्रदर्शनियों की समय-सीमा तथा क्षेत्र सीमा निश्चित रहती है जिसमें इनको घुमाया जाता है।

इसके वहाँ ले जाने के पहले क्षेत्र में प्रचार किया जाता है कि यह प्रदर्शनी अमुक स्थान

पर अमुक समय पहुँच कर इतने दिनों रहेगी। इससे वहाँ के आबालवृद्ध, औरतें आदि वहाँ आते हैं और इसका लाभ उठाते हैं। इसके उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होते हैं संग्रहालयकर्मी जो उसी प्रकार के प्रदर्श उस सीमित क्षेत्र में सजावें जो अत्यन्त उपयोगी हों, दर्शकों को उनका महत्त्व बतावें एवं पैम्फलेट भी दें। साथ ही, इन प्रदर्शों का चित्र और सम्बन्धित सरल, सस्ता, छोटा साहित्य भी बेचने के लिए रखना चाहिए कि जो चाहे इन्हें खरीद सके।

इस प्रकार की प्रदर्शनियाँ संग्रहालय, सरकारी संस्थाएँ जैसे कृषि विभाग, रेल विभाग, व्यक्तिगत संस्थान जैसे गीता प्रेम गोरखपुर आदि प्रायः आयोजित करती हैं। सरकार को चाहिए कि ऐसी प्रदर्शनियों के आयोजन हेतु सभी संग्रहालय को ऐसे वाहनों को बनवाकर प्रदान करे कि सुविधापूर्वक इसमें प्रदर्श सजाए जायँ। निजी संस्थान तो ऐसे वाहन रखते हैं जैसे गीता प्रेस, गोरखपुर, शक्तिकुञ्ज, हरिद्वार आदि। इसमें रैक बने होते हैं जिन पर छोटे प्रदर्श रखते हैं तथा खूंटियाँ लगी होती हैं जिन पर चार्ट पोस्टर टांगते हैं। इनको प्रदर्शन हेतु पीछे से खुलने वाला न बना कर एक किनारे से पूरा खुलने वाला द्वार बनाते हैं जिससे दर्शक तीन ओर की दीवालों और बीच में सजे सामान को सरलता से देख सकता है और बाहर से संग्रहालयकर्मी उनके विषय में उसे समझता है।

इस प्रकार की पहली प्रदर्शनी भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता द्वारा 1969 ई० में आयोजित की गई थी। 'भारतीय इतिहास और पुरातत्त्व' विषय पर लगी प्रदर्शनी पश्चिमी बंगाल से चलकर विहार, उत्तर प्रदेश, नई दिल्ली और पंजाब तक विभिन्न स्थानों पर प्रदर्शित की गई हैं। इसका बड़ा स्वागत हुआ और यह भारतीय इतिहास और भारत के पुरखों की थाती उनकी संतानों के द्वार तक पहुँचाने में अत्यन्त सफल रही। इससे प्रेरित अन्य संग्रहालयों ने भी ऐसी प्रदर्शनियों का आयोजन शुरू किया। इसमें सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद, भारतीय कला के विभिन्न आयामों पर जैसे मूर्तिकला, वास्तुकला, चित्रकला आदि पर कई सचल प्रदर्शनियों का आयोजन किया। नई दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय ने 'आर्किटेक्टस ऑफ इण्डिया' नाम से प्रदर्शनी को समय-समय पर शिक्षण संस्थाओं में भेजकर भारत के सपूतों की जानकारी देने का कार्य किया। नई दिल्ली के 'राष्ट्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय' ने दिल्ली के स्कूली छात्रों के लिए—स्कूल लोन सर्विस (विद्यालय उधार सेवा) कार्यक्रम शुरू करके स्कूली बच्चों को उनके पाठ्यक्रम पर आधारित एक किट (पैकेट की सामग्री) सशक्त माध्यम से भिजवाता है तथा अध्यापकों हेतु एक निर्देश पुस्तिका। ये निःशुल्क होते हैं। ऐसे ही मथुरा संग्रहालय भी विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के छात्रों हेतु सचल निःशुल्क प्रदर्शनियों का आयोजन करता है।

कुछ संग्रहालयों में इसके लिए अपने वाहन उपलब्ध हैं। कभी-कभी मांग पर भी संग्रहालय उसके अनुसार प्रदर्शनियों का आयोजन करता है। 1979 ई० में राष्ट्रीय विज्ञान परिषद' द्वारा 'सचल विज्ञान प्रदर्शनी' का आयोजन हुआ था। इसके पास ऊर्जा, गति विज्ञान, प्रकाश, आवासीय गृह, जल ही जीवन है, कृषि, आदमी को आँकना आदि योजनाएँ प्रदर्शनियों हेतु है। इसी प्रकार कृषि योजना भी बनाई गई है जिसमें राज्य सरकार, कृषि विश्वविद्यालय तथा अन्य संस्थाओं की भागीदारी है। इसके लिए यह नारा देना होगा—'संग्रहालय गाँवों तक पहुँचो।' कुछ विशिष्ट त्योहारों जैसे कृष्ण जन्माष्टमी, रामनवमी, प्रसिद्ध मेलों पर भी इनका आयोजन करते हैं जहाँ लोग इकट्ठा होते हैं। चारों माघ मेलाओं में भी ये भेजी जाती हैं।

□